ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 50-52
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

राजा जवाहर सिंह कालीन जाट वास्तुकला : महाराजा सूरजमल की छतरी के विशेष संदर्भ में

1. प्रोफेसर निशा राठौर
2. आदित्य शुक्ला

1. प्रोफेसर– इतिहास विभाग, 2. शोध अध्येता– आगरा कॉलेज, आगरा (उ0प्र0), भारत

Received-09.07.2023, Revised-15.07.2023, Accepted-20.07.2023 E-mail: aditya1988shukla@gmail.com

सारांशः ***भरतपुर राज्य के स्मारक जाट शासकों की मनस्थिति, व्यक्तित्व, वैचारिक संरचना और उसकी वास्तु शिल्प कौशल का प्रतिबिंब है। इन्होंने किलों, महल, हवेली, बगीचें, मंदिर, मस्जिद, तालाब, बांध, छतरियों सहित अनेकानेक स्मारकों का निर्माण किया, जो भरतपुर, डीग, कुम्हेर, गोवर्धन, वृंदावन से अलीगढ़ और बल्लभगढ़ तक आज भी देखे जा सकते हैं।***

सवाई जवाहर सिंह 'भारतेंद्र' महाराजा सूरजमल का उत्तराधिकारी तथा भरतपुर राजवंश का शक्तिशाली शासक था। उसमें कठिन से कठिन कार्यों को प्रारंभ करने का साहस और निर्भीकता थी और शुरू किये गये कार्यों को पूर्ण करने के धीरज और वीरता जैसे गुणों का समावेश था। अगर एक ओर उसने अपने पिता के हत्यारे रूहेलों से युद्ध कर 'बहादुर' (अर्थात वीर योद्धा) की उपाधि प्राप्त की वहीं दूसरी ओर उसने वास्तुकला एवं अन्य ललित कलाओं को आत्मसात कर अपने व्यक्तित्व के दूसरे पहलू को उजागर कर भारतीय संस्कृति को गति देने में योगदान दिया।

कुंजीभूत शब्द– वैचारिक संरचना, वास्तु शिल्प कौशल, साहस, निर्भीकता, धीरज, वीरता, समावेश, वास्तुकला, आत्मसात।

जवाहर सिंह ने न्याय प्रिय होने, न्याय और व्यवस्था को स्थापित करने तथा बाहरी आक्रमणकारियों से अपने राज्य को सुरक्षित करने के साथ–साथ अपने पूर्वजों की गौरवमयी परंपरा को बनाये रखा। कला और साहित्य के प्रति उसका प्रेम उन ऐतिहासिक धरोहरों से परिलक्षित होता है, जो या तो उसके द्वारा निर्मित की गयी अथवा उनका जीर्णोद्धार किया गया। राजा जवाहर सिंह अपने पिता सूरजमल की तरह ना तो प्रशासनिक योग्यता में कम थे और ना ही सैन्य गुणों में। अधिकांश समय युद्ध में व्यस्त रहते हुए भी वह न केवल स्थानीय प्रशासन पर ध्यान देते थे, बल्कि शांति व्यवस्था भी बनाए रखना चाहते थे।[1]

राजा जवाहर सिंह द्वारा निर्मित स्मारकों से उनके चरित्र का विश्लेषण किया जा सकता है। उसके द्वारा अनेकानेक स्मारक या तो निर्मित किए गए या उनका जीर्णोद्धार कराया गया। इन स्मारकों में प्रमुख है–गोवर्धन में निर्मित राजा सूरजमल की छतरी (समाधि), कुसुम सरोवर, डीग स्थित लक्ष्मण जी का मंदिर, परसोली स्थित चंद्र सरोवर, जवाहर कुंड, जवाहर बुर्ज, बारादरी, हमाम आदि हैं।

जवाहर सिंह सैनिक गुणों और प्रशासनिक काबिलियत दोनों में ही निपुण था जो अपनी महत्वाकांक्षा और बदले के लिए किसी भी हद तक जा सकता था। हालांकि उसने एक समय अपने पिता राजा सूरजमल का विद्रोह भी किया था, लेकिन दूसरी और उसने अपने पिता की हत्या का बदला लेने के लिए अपने प्राणों को भी संकट में डाल दिया था। गोवर्धन में स्थित राजा सूरजमल की छतरी उसके अपने पिता के प्रति प्रेम व स्नेह का द्योतक है।

जवाहर सिंह ने अपने पिता राजा सूरजमल की याद में एक भव्य छतरी (समाधि) का निर्माण किया जो कुसुम सरोवर के पूर्व में परिक्रमा मार्ग पर राधा कुंड और गोवर्धन के मध्य स्थित है। यह जाट वास्तु कला का एक जीवंत उदाहरण है।[2] यह स्मारक लंबाई में 400 फीट है, जिसके दोनों ओर रानी हसिया और रानी किशोरी के मंडप निर्मित हैं। मुख्य छतरी और दोनों मडपों को जालीदार दीवार पृथक करती हैं। मुख्य समाधि 57 फीट वर्गाकार रूप में है, जो गुलाबी बालुई पत्थर से निर्मित की गई है। यहां कालांतर में बनी राजा बलवंत सिंह, बलदेव सिंह और रणवीर सिंह की पूर्ववर्ती है। इसकी बनावट का मुख्य आकर्षण चबूतरा है जो बहुत सुंदर और बारीकी से निर्मित है। इसके चारों ओर अलंकृत पैनल है3 जिसके बीच में सीढ़ियों के लिए कोई भी स्थान छोड़ा नहीं गया है।

सूरजमल की छतरी में मेहराब प्राकृतिक प्रतीत होते हैं। हालांकि यह मुगल स्थापत्य कला के अनुरूप है परन्तु इसमें दृढ़ता और काल्पनिक सजावट की प्रचुरता है इसमें सांचे उथले हैं और दीवार के अलंकरण में आलो और फूलदानों की बहुतायत है। लंबाकार कुंज जिसमें वक्ररेखीय रूपरेखा जैसी गुंबददार छत लगभग हर अग्रभाग में दृष्टिगोचर होती है। संभवतः यह कला बंगाल से ली गयी थी जहां साधारण घरों की छत मुड़े हुए बांसों से निर्मित की जाती थी। मुख्य कक्ष के बीच में संगमरमर का बड़ा पत्थर है, जिसपर प्रतीतात्मक चिन्ह खुदे हुए हैं। छतरी के मुख्य गुंबद जो अर्द्ध चंद्राकार है, की छत की प्रत्येक दीवार पर भित्ति चित्र बने हुए हैं, जिसमें सूरजमल के जीवन से संबंधित विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है तथा राजा के ठॉठ बॉट और दरबार के विषय में जानकारी स्पष्ट होती है। इन चित्रों से ज्ञात होता है कि ग्रामीण अंचलों में नृत्य एवं लोक गायन मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन थे।4 उस काल में हरियाणा के मेवल भाला फेंक में सबसे निपुण माने जाते थे। एक व्यक्ति चित्र में एक मेव राजा सूरजमल के समक्ष भाला फेंक रहा है जो इस तथ्य की पुष्टि करता है। अन्य चित्रों में तलवारबाजी, लाठी आदि चलाने के चित्र बने हुए हैं। इन चित्रों से यह भी पुष्टि होती है कि लोग आवागमन के लिये इक्का एवं रथ का प्रयोग किया करते थे। समृद्ध लोग घोड़ें और ऊँट का प्रयोग करते थे तथा गरीब पैदल यात्रा करते थे।

मुख्य समाधि कक्ष के दाहिनी ओर किशोरी की छतरी है जिसकी प्रमुख विशेषता भित्ति चित्र हैं, जिसमें रानी किशोरी और राजा सूरजमल के विवाह का चित्र सजीव प्रतीत होता है। वहीं दूसरे चित्र में भगवान श्री कृष्ण गोवर्धन पर्वत को उंगली पर उठाए हुए हैं जिसमें स्त्री–पुरूष के साथ–साथ जानवर एवं चिड़िया भी शरण ली हुई है।[5] बाईं ओर रानी हसिया का मंडप है, जिसकी विशेषता भी भित्ति चित्र है इसमें झूले और ढोलक के साथ राजा रानी के प्रणय दृश्य मनमोहक है।

राजा सूरजमल की छतरी के अग्रभाग में कुसुम सरोवर है। इस सरोवर में आघाध जल राशि है और इसके चारों ओर पाषाण

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

निर्मित सीढ़ियाँ और बुर्जियां हैं। इसका परिरूप ब्रज के अत्यन्त कला–कुशल और सिद्धहस्त शिल्पी द्वारा बनाया हुआ जान पड़ता है। इसकी सीढ़ियों का व्यवस्थित झुकाव उसकी पंक्तियों से सटी हुई बुर्जियों और उनके ऊपर की छतरियों का सुचारू संचालन, ऊपर कुर्सी वाला भव्य भवन, जाट स्थापत्य कला से युक्त उसके सुंदर गुंबद द्वार, शिखर, छज्जें और मेहराबों की सजावट, उसके उद्यान का हरितिया पूर्ण वन वैभव सब मिलकर इस कलाकृति को अद्धत शोभा प्रदान करते हैं।

भरतपुर नरेश ठाकुर बदन सिंह एवं राजा सूरजमल के समय श्री कृष्ण की उपासना की जाती थी, परन्तु उनके पुत्र राजा जवाहर सिंह ने शक्ति के स्वामी श्री लक्ष्मण जी (श्री वेंकटेश जी) की उपासना प्रारंभ करवाई तथा स्वयं डीग, शाहपुरा, बाटी (मथुरा) पटौदी (हरियाणा) आदि स्थानों पर श्री लक्ष्मण जी के मन्दिरों का निर्माण कराया। उसी क्रम में उस समय भरतपुर नगर में जो कि विकसित हो रहा था, लक्ष्मण जी का मंदिर बनवाया गया। भरतपुर शहर के मध्य दक्षिणी भाग में स्थित यह मंदिर लंबे समय और बड़ी माला में पूंजी के विनियोग के कारण अति भव्य विशाल और उच्च कोटि के स्थापत्य को समेटे हुए हैं।

इसके अतिरिक्त डीग के उद्यान–भवन जाट शिल्पकला के सर्वोत्तम प्रतीक हैं। अनेकानेक निर्मित भवनों में से एक सूरज भवन के निर्माण को पूर्ण करने का श्रेय भी राजा जवाहर सिंह को जाता है। इसके मनोहर फिरंग फूल पत्तियों से संचित स्तंभ झरोखे, बारादरी छतरी तथा गुंबदों की कला प्राचीन हिंदू शिल्प कला से किसी भी भांति कम नहीं है। इसकी प्रशंसा में भरतपुर के भवनों की 19वीं सदी में देखभाल करने वाले इंजीनियर जे0एच0 देवनिश ने लिखा है कि "डीग" में जो संगमरमर का एक भवन है, वह बारीकियों की दृष्टि से मुगल कलाकृतियों से स्पष्ट भिन्न है।

इसका निर्माण अलौकिक अद्वितीय है।"[6] तापमान को नियंत्रित करने के लिये छतों की मोटाई सवा सात फुट तक रखी है परन्तु साथ ही भार कम करने के लिए मिट्टी के पके बर्तनों का सही ढंग से प्रयोग किया गया है। नुकीले किनारे वाले मेहराब, वक्र मेहराब, तोड़े, पत्तियों वाले अलंकृत स्तंभ आदि सभी रूपक इस भवन में मौजूद है तथा इन सभी में वंशी पहाड़पुर का पत्थर प्रयोग में लाया गया है।

जवाहर सिंह कला और वास्तुकला के प्रति असीम प्रेम रखता था। उसने डीग में जवाहर बुर्ज पर एक बारादरी और जवाहर गंज में हमाम का निर्माण भी कराया था। वह एक धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था और अपने पिता की तरह संतों की संगत में समय व्यतीत करता था। कहा जाता है कि जवाहर सिंह के गुरू रामकृष्ण महंत बैरागी, (जो जाटों के साथ युद्ध में भी भागीदारी करते थे, महाराजा सूरजमल के भी गुरू थे)[7]

जवाहर सिंह ने पारसोली नामक स्थान पर एक अष्टभुजा चंद्र सरोवर का निर्माण कराया था।[8] यह स्थान गोवर्धन से साँख जाने वाले मार्ग पर पांच किलोमीटर दूर स्थित है। वर्तमान साहित्य के अनुसार इस गांव में सूरदार निवास करते थे। पुष्टिमार्ग स्त्रोतों के अनुसार यह स्थान भगवान श्री कृष्ण से भी जुड़ा है तथा लगभग 5000 वर्ष पुराना है। कहा जाता है कि यहाँ भगवान कृष्ण ने पूर्णिमा की रात जो गोपियों के साथ रास करने के लिये 6 माह तक स्थिर कर दिया था। इसी के परिणामस्वरूप यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है:

'इत उत गोपी, बिच बिच माधव। निरतत ताता थेई।'

इस कुंड तक जाने के लिये सीढ़ियां बनी हुई हैं। रानी हंसिया ने यहां एक चंद्राकार आकृति का मंदिर बनवाया। ब्रिटिश काल में यह स्थान कदंब के पेड़ों से घिरा हुआ था तथा यहाँ एक विशाल वटवृक्ष था, जो वंशीवट कहलाता था।[9] वर्तमान में यह कुछ जीर्णावस्था में है।

कुसुम सरोवर के दक्षिण–पश्चिम में एक पक्का तालाब और भी है जो जवाहर कुंड के नाम से जाना जाता है। यह उसके द्वारा निर्मित अन्य तालाबों की अपेक्षा छोटा है। यह तालाब वर्गाकार है तथा लाल बालुई पत्थर से निर्मित है। इसके चारों ओर प्रक्षेप फलन है जो अर्थ अष्टभुजाकार में है। यह वास्तुकला की दृष्टि से बहुत उत्कृष्ट नहीं है परन्तु यह जवाहर सिंह की निर्माण श्रृंखला का एक और उदाहरण है। उसने नौका विहार के लिए अन्य जलाशयों का भी निर्माण कराया तथा इसके अतिरिक्त फुव्वारों युक्त छोटी नहरों का निर्माण कराया।[10]

इसके अतिरिक्त जवाहर सिंह ने सभी दुर्गों की मरम्मत कराई तथा उनको सैनिक साज–सामान युद्ध प्रसाधनों आदि से आत्मनिर्भर बना दिया। उसने सीमा पर स्थित गाड़ियों में भी मरम्मत करवाई तथा सैनिकों को गोला और बारूद से सुरक्षित किया। उसके दुर्गों के बाहर निर्मित मकानों व हवेलियों को सुरक्षा की दृष्टि से तुड़वाकर साफ मैदान बना दिये थे।

राजा जवाहर सिंह द्वारा निर्मित स्मारक के स्थल और पूर्वजों द्वारा निर्माणों की नवीनीकरण में जाट राजाओं के इस पक्ष को भी उजागर किया है। वास्तुकला वहीं फल–फूल सकती है, जहाँ वित्तीय स्थिति सुदृढ़ है। अतः यह निर्माण जवाहर सिंह के समय की स्थिति पर प्रकाश डालती है। इसके अतिरिक्त यह वह समय था, जब मुगल साम्राज्य का शनैः शनै पतन प्रारंभ हो गया था और कारीगर काम ना मिलने के कारण भूखों मरने के कगार पर पहुँच गए थे। बंसी पहाड़पुर एवं अन्य स्थानों से निर्माण सामग्री की अत्यधिक आपूर्ति इस बात का द्योतक है कि यह काल भरतपुर राजवंश का श्रेष्ठ काल था। उपरोक्त निर्माणों से यह भी परिलक्षित होता है कि राजा जवाहर सिंह एक योग्य शासक होने के साथ–साथ कला प्रेमी धर्म परायण तथा अच्छा आर्थिक प्रबंधक था और उसमें वास्तविक एवं सैन्य संगठन की उत्कृष्ट समझ थी। उसके द्वारा निर्मित स्मारक आज भी ब्रज क्षेत्र को दीप्यमान करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कालिका रंजन कानूनगो, 'हिस्ट्री ऑफ द जाटस्' पृ0 126.

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

2. कुंवर नटवर सिंह, 'महाराजा सूरजमल', पृ0 105.
3. एफ. एस. ग्राउस, 'ए डिस्ट्रिक्ट मेमोयर, पृ0 306–307.
4. फ्रांसू, 'त्वारीख–ए–हुनुद' पृ0 22ं–22b।
5. अनिल कुमार वर्मा, 'मॉन्यूमेंट्स ऑफ भरतपुर', पृ0 128.
6. जे. ए. देवनिश, 'द भवन्स एण्ड गार्डन पैलेसेस', पृ0 42.
7. दंडाध्यक्ष पारिवारिक दस्तावेज जिनका उद्धरण ठाकुर गंगा सिंह की पुस्तक में मिलता है, पृ0 263–64.
8. ब्रज वैभव, 'संपादक, गोपाल प्रसाद व्यास, पृ0 152.
9. 'मथुरा : ए डिस्ट्रिक्ट मेमोयर, एफ. एस. ग्राउस, पृ0 284.
10. मनोहर सिंह राणावत, भरतपुर महाराजा जवाहर सिंह जाट, पृ0 91.

*****